Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

नवयथार्थवादी प्रयोगधर्मिता के दौर में भारतीय सिनेमा

अमित कुमार झा
UGC-Net समाजशास्त्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
Email-amitjha9648@gmail.com

सरांशिका – मानव के व्यक्तित्व की एक बड़ी विशेषता यह रही है की वह चित्रों के माध्यम से देखे हुए वस्तुओं को लम्बे समय तक याद रख पता है। इन्ही दृश्यों को एक चलते क्रम में व्यवस्थित कर चलचित्र का निर्माण हुआ। जो सिनेमा एवं फिल्मों के रूप ख्याति अर्जित की द्य यूरोप में विकसित सिनेमा धीरे–धीरे सम्पूर्ण विश्व में फैल गया। भारत भी चलचित्र के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। राजा हरिश्चंद्र से प्रारम्भ हुयी भारतीय सिनेमा आज अपने सौ वर्ष को पूरा कर चूका है। इस सौ वर्ष के बृहद अवधि में भारतीय सिनेमा ने विविध संकल्पना के आधार पर फिल्मों का निर्माण किया। इन्ही संकल्पनाओं में एक महत्वपूर्ण संकल्पना नवयथार्थवाद सिनेमा की थी। जो फरांस एवं जर्मनी में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उभरकर सामने आया। इसका प्रभाव भारतीय सिनेमा पर भी पड़ा। भारतीय निर्देशकों ने भी अपनी फिल्मों में नवयथार्थवाद को अपने तरीके से प्रस्तुत करने का कार्य किया है। इन फिल्मों में प्यासा, दो बीघा जमीन, बूट पालिश, अमृत मंथन, पाथेर पांचाली जैसी फिल्में थी ,जो अपने आप में भरतीय सिनेमा के लिए मिल का पत्थर है।

मुख्य शब्द – नवयथार्थवाद, द्वितीय विश्व युद्ध, राजा हरिश्चंद्र, दो बीघा जमीन ,प्यासा ।

प्रस्तावना – जीवन और साहित्य का बड़ा ही गहरा सम्बन्ध है। इसका सम्बन्ध जितना सूक्ष्म है उतना व्यापक भी है। इसका सम्बन्ध जितना सरल बोध होता है उतना ही जटिल भी है। साहित्य की रचनाये हमारे जीवन के विधि आयाम को एक व्यापक फलक पर प्रस्तुत करता है जिससे जीवन के विविध पक्ष का सम्पूर्ण समाज से सरोकार हो पाता है। वह साहित्य में अपने आप की प्रस्तुति को देख पता है। इसलिए साहित्य का मानव जीवन में शश्वत महत्व है जिसे नाकारा नहीं जा सकता है।

साहित्य से इतर सिनेमा का भी हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध है। सिनेमा की व्यापकता भारतीय समाज में बहुत ज्यादा है वह करोड़ों लोगो तक अपनी पहुंच रखा हुआ है। सिनेमा मनोरंजन के साथ साथ समाज की वास्तविक समस्या से भी हमारा सरोकार करवाता है। संचार के क्षेत्र में द्रुत गति से विकास के कारण इसकी पहुंच जनसामान्य तक और भी सुलभ हो गयी है।

सिनेमा आज भी समाज के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है सिनेमा मनोरंजन के साथ – साथ हमें समाज का वास्तविक आईना भी दिखती है। भारतीय सिनेमा का प्रारम्भ जहाँ मूक सिनेमा से हुआ था वही आज वह विकास करते हुए नित नए नवाचार कर रहा है।

सिनेमा और नवयथार्थवाद – विश्व के सबसे बड़े त्रासदी में से एक विश्व युध्द थी। जिसका प्रभाव विश्व के सम्पूर्ण समाज पर व्यापक रूप से पड़ा इसका प्रभाव तत्कालीन सिनेमा एवं साहित्य पर भी पड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के दौर में फ्रांस और इटली साहित्य और सिनेमा का मुख्य केंद्र था। इन देशों ने सनेमा को एक अलग दृष्टिकोण से देखना प्रारम्भ किया। फ्रांस ने इसे ''नयी धारा'' इटली में ''नवयथार्थवादी सिनेमा '' जर्मनी में युवा सिनेमा, इंग्लैण्ड एवं अमेरिका में '' भूमिगत सिनेमा '' की संज्ञा दी गयी है। भारतीय सिनेमा पर भी इस यथार्थवादी

सिनेमा का प्रभाव रहा है, परन्तु भारतीय सिनेमा ने शीघ्र ही इनके दृष्टि से इतर एक नयी दृष्टि बना ली थी।

भारतीय सिनेमा और नवयथार्थवाद – भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध निर्देशक सत्यजीत रे पर यथार्थवादी सिनेमा का गहरा प्रभाव पड़ा इसके अलावा विमल राय, राज कपूर, गुरुदत्त, श्याम बेनेगल पर भी इसका प्रभाव रहा है। राज कपूर नवयथार्थवाद से प्रेरित हो कर बूट पालिश (१९५४) बनायी थी। वही सत्यजीत रे ने विभूतिभूषण बँधोपाध्याय के उपन्यास पाथेर पांचाली से प्रभावित होकर इसी पर आधारित पाथेर पांचाली सिनेमा बनायी। जो बंगाल के एक

गरीब ब्राह्मण परिवार की त्रासदी को दर्शक के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

नवयथार्थवाद से प्रभावित एक और प्रसिद्ध निर्देशक विमल राय ने फिल्म ' दो बीघा जमीन (१९५३) बनायी। जो भारतीय किसान की विडम्बना को प्रस्तुत करती हुयी एक मिल का पत्थर साबित हुयी सिनेमा थी। इस फिल्म में एक गरीब किसान अपनी जमीन को साहूकार से बचाने के लिए एवं अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए कलकत्ता जैसे बड़े शहर में हाथ रिक्शा चलने लगता है।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध उपन्यासकार नारायण हरिआप्टे ने एक ऐसी कहानी लिखी जिसमे एक गरीब किसान अपनी गरीबी लाचारी में अपने परिवार का भरण –पोषण करता था परन्तु लालची साहूकार के ऋण के कारण वह अपनी जमीन गवा देता है। वह रोजगार की तलाश में शहर

में आकर मिल मजदूर बन जाता है जो एक पलायन की समस्या को भी व्यक्त करती है इस पर बाबू राव पेंटर ने सहकारी पाश (१९२५) को बनाया।

सन १९३० के आस – पास भारत में उद्योग–धंधे का विकासव्यापक पैमाने पर होने लगा था। मिल के मालिक अधिकतम लाभ की प्राप्ति के उद्देश्य से मजदूरों का शोषण करने लगे जिस कारण तत्कालीन समाज में मिल मालिक एवं मजदूर के बिच संघर्ष के मुद्दे अक्सर सुनायी देते थे। इसी संघर्ष पर प्रेमचंद्र की लिखी मिल मजदूर (१९३४) सिनेमा आयी। इस सिनेमा में मिल मजदूर का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया। इस सिनेमा में मिल मालिक की मृत्यु के बाद उनके पुत्र –पुत्री मिलकर मिल का संचालन करते है। मिल मालिक का पुत्र विनोद दुष्ट प्रवृत्ति का रहता है जो मजदूरों पर शोषण और अत्याचार करता है। इसका विरोध कैलाश करता है और धीरे –धीरे लड़ाई हिंसक हो जाता है। इस लड़ाई में मिल मालिक की पुत्री पदमा कैलाश का साथ देती है। फलतः मजदूरों की विजय होती है और विजय का जेल जाना पड़ता है। पदमा और कैलाश शादी कर लेते है तथा मिल का संचालन पुनः प्रारम्भ कर देते है।

भारतीय सिनेमा के नवयथार्थवाद के दौर में नानू भाई वकील ने सेवा –सदन (१९३४) प्रस्तुत की। वी. शांताराम ने अमृत मंथन (१९३६) और फ्रैज आस्टिन द्वारा निर्देशित सिनेमा अछूत कन्या (१९३६)। यह सिनेमा ब्राह्मण मोहन लाल और दुखिया हरिजन की जातियों के इर्द –गिर्द घूमती है। १९३७ में वी. शांताराम की एक और यथार्थवादी सिनेमा 'दुनिया न माने' आयी जो जो समाज में बेमेल विवाह होने बाद लड़की त्रासदी और वेदना का व्यक्त करती है।

नवयथार्थवाद से प्रभावित भारतीय सिनेमा के इतिहास में मिल का पत्थर सिनेमा प्यासा (१९५७) है जिसका निर्माण गुरुदत्त किया। इस फिल्म में एक युवा कवि के टूटते सपने, गरीबी एवं बेरोजगारी का प्रस्तुत किया गया है। वह अपने इन सब परिस्थति में अपनी प्रेमिका एवं परिवार को खो देता है। उसकी कविता को कोई भी छापने को तैयार नहीं था। इस बदहाल एवं एवं परेशान जीवन को गुरुदत्त ने अपने अभिनय से जीवंत करने का कार्य किया है। जीवन से बार बार ठोकर खाकर वह आत्महत्या का फैसला करता है। परन्तु वह एक भिखारी के कारण बच जाता है। उसके अस्पताल में भर्ती के दौरान शहर में उसकी रचना छपकर प्रसिद्ध हो जाता है। उसकी रचनाओं को छपवाने का कार्य उससे प्रेम करने वाली एक वेश्या करती है। अंत में नायक की मृत्यु होने पर उसकी प्रसिद्धि से प्रकाशक एवं नायक के भाई लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते है द्य इस प्रकार कवि एक स्वार्थी दुनिया को अलविदा कह देता है।

७० के दशक में भरतीय सिनेमा में गुलजार, ऋषिकेश मुखर्जी एवं बासु चटर्जी जैसे निर्देशकों ने नवयथार्थवादी सिनेमा द्वारा समाज की वास्तविक स्थिति को रखने का भरपूर प्रयास किया। ऋषिकेश मुखर्जी ने अपने सिनेमा के माध्यम से मध्यम वर्गीय परिवार के समस्यों को जीवंत कर दिया है। जिसमे चुपके –चुपके, अभिमान, आनंद, गुड्डी जैसी महत्वपूर्ण फिल्में है। वर्तमान समय में गुजारिश, रंग दे बसंत, पीपली लाइव, चक दे इण्डिया, लाइफ इन ए मेट्रो, सैराट , विलेज रॉकस्टार्स एवं बधाई हो जैसे प्रमुख सिनेमा है।

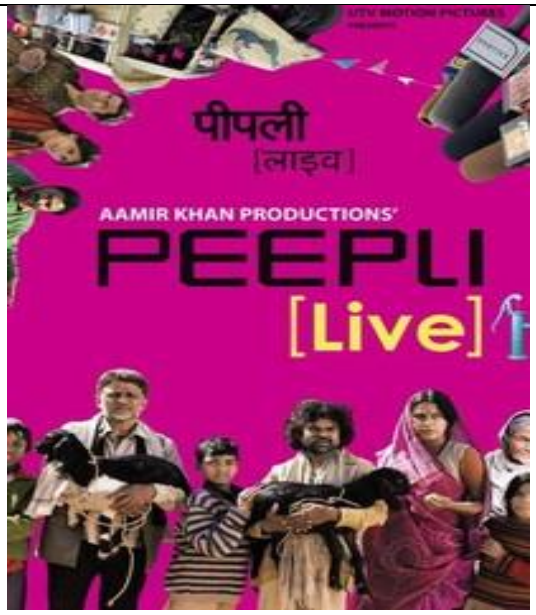

निष्कर्ष – जिस नवयथार्थवादी सिनेमा का प्रारम्भ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में हुआ बाद वह धीरे –धीरे सम्पूर्ण विश्व में फैल गया। यह सिनेमा तत्कालीन समाज के स्थिति का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत करती है। नवयथार्थवादी सिनेमा का चलन धीरे – धीरे भारत में भी हुआ तत्कालीन निर्देशक ने इसे बखूभी परदे पर प्रस्तुत किया। इन नवयथार्थवादी सिनेमा को भारतीय निर्देशकों ने पश्चात् से अलग एक नयी भारतीय दृष्टिकोण के देखने का प्रयास किया और उसे भारतीय समाज के अनुरूप प्रस्तुत किया। वर्तमान समय में सैराट, बधाई हो, नील बट्टे संन्नाटा, उड़ान, न्यूटन, शाहब जैसी मत्वपूर्ण सिनेमा आयी है जो भारतीय सिनेमा के नवयथार्थवादी पृष्टभूमि को और भी सशक्तता प्रदान कर रही है।

सन्दर्भ सूची –

1. मिश्र, डॉ. वि"वनाथ, हिन्दी फिल्मो ं मे ं साहित्यिक उपादान, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1980
2. देशपाण्डे, अनिरूद्ध, क्लॉस पावर एण्ड कॉन्सेसनेश इन इण्डियन सिनेमा एण्ड टेलीविजन,

प्राइमस बुक्स, नई दिल्ली, 2009
3. श्रीनेत, दिनेश, पश्चिम और सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
4. थाम्पसन, क्रिस्टिन एवं बोर्डवेल, डेविड, फिल्म हिस्ट्रीः एन इंट्रोडक्शन तृतीय संस्करण, मैकग्राहिल, 2010
5. भारद्वाज, विनोद, नया सिनेमा, वाणी प्रका"ान, नई दिल्ली, 1985
6. वासुदेव, अरूणा, लिबर्टी एण्ड लाइसेंस इन दि इण्डियन सिनेमा, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 1978
7. दासगुप्ता, चिदानन्द, सत्यजीत राय का सिनेमा, ने"ानल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1980
8. सिंह, प्रताप, सिनेमा का जादुई सफर, अनुभव प्रकाशन, दिल्ली, 2011
9. भट्टाचार्य, रिंकी, बिमल राय ए मैन ऑफ साइलेन्स, इडंस हार्पर कॉलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1994
10. पारख, जवरीमल्ल, हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 2006
11- देश पाण्डे, अनिरुद्ध, क्लास पावर एण्ड कॉंसशनेस इन इण्डिया सिनेमा एण्ड टेलीविजन, प्रीमुस बुक्स, नई दिल्ली, 2009